स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव
राज्य स्तरीय कार्यक्रम

ओडिशा

दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबिल सोसायटी (अनगुल जिले की सभी डिवाइन लाइफ सोसायटी शाखाओं द्वारा संचालित) अनगुल जिले के गहम गाँव में चिदानन्द सैन्टेनरी चैरिटेबल डिस्पैंसरी के माध्यम से निर्धनों एवं असहायों की सेवा में सफलतापूर्वक सतत संलग्न है। दिसम्बर २०१४ में लगभग ५५८ निर्धन रोगियों का निरीक्षण करके नि:शुल्क औषधियाँ दी गयीं। डा. आर. एन. पण्डा, डा. बी. प्रधान, फार्मेसिस्ट श्री श्वेताम्बर प्रधान, श्री पी. के. धर और श्री हिमांशु पाणि ने इस सेवा-कार्य में अपनी सेवाएँ दीं।

परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के तत्त्वावधान में, शिवानन्द सेवाग्राम चैरिटेबल सोसायटी ने नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर भी आयोजित किया। शिविर का उद्घाटन सब-कलेक्टर एवं बी. डी. ओ. कानिहा द्वारा किया गया। इसमें ५९० निर्धन रोगियों का परीक्षण तथा उनमें से १४७ के ऑपरेशन कलिंग नेत्र चिकित्सालय ढेंकानाल में सफलतापूर्वक किये गये।

युवा पीढ़ी को नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करने के लिए सोसायटी ने २७ दिसम्बर २०१४ से १ जनवरी २०१५ तक 'व्यक्तित्व विकास शिविर' आयोजित किया। इस ५ दिवसीय शिविर में विभिन्न महाविद्यालयों से लगभग २०० विद्यार्थी सम्मिलित हुए। शिविर की गतिविधियों में प्रात:कालीन प्रार्थना, आसन-प्राणायाम, विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन तथा सायंकालीन प्रार्थना का कार्यक्रम रहा। श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज, ब्रह्मचारी विश्वम्भर जी, श्री विश्वमोहन पटनायक जी, श्री रजतकुमार प्रधान जी, श्री के. श्रीधर दास जी तथा श्री मदनमोहन पंडा जी ने इन विषयों पर प्रवचन दिये : बीस आध्यात्मिक नियम, विश्व-प्रार्थना, श्रीमद्भगवद्गीता, दिव्य जीवन के सिद्धान्त और उनका व्यावहारिक उपयोग तथा मन्त्र एवं श्लोक पाठ का महत्त्व। १ जनवरी २०१५ के नववर्ष कार्यक्रम में मन्त्र दीक्षा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्मिलित किये गये।

गुजरात

परम आराध्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के पावन जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में, डी एल एस सुरेन्द्रनगर शाखा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करती रही है। शाखा ने शताब्दी समारोह का शुभारम्भ सुरेन्द्रनगर के निकटवर्ती १०८ गाँवों में संकीर्तन का प्रारम्भ श्री स्वामी गोपालानन्द जी

महाराज के निर्देशन में किया। यह विलक्षण यात्रा २४ सितम्बर २०१४ से आरम्भ हो कर २४ दिसम्बर २०१४ को भरद गाँव में संकीर्तन के साथ सम्पूर्ण हुई। मुख्यालय आश्रम के श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज एवं श्री स्वामी अक्षरानन्द जी महाराज तथा वृन्दावन के श्री स्वामी राधामोहनदास जी महाराज भरद के संकीर्तन में सम्मिलित हुए तथा उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित भी किया। कार्यक्रम के अन्त में लगभग २७०० भक्तों ने प्रसाद सेवन किया। गायों, पक्षियों,

चींटियों और कुत्तों को भी भोजन दिया गया। संकीर्तन यात्रा के समय शाखा द्वारा २३ गाँवों के भग्न मन्दिरों के पुनर्निर्माण हेतु वित्तीय सहायता भी दी गयी।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की अपार कृपा से २४ दिसम्बर को गन्जेला गाँव में डी एल एस सुरेन्द्रनगर के शाखा सदस्यों के प्रयत्न से एक नयी डी एल एस शाखा का उद्घाटन किया गया तथा ग्रामवासियों को सम्बोधित भी किया। श्री स्वामी गोपालानन्द जी ने नयी डी एल एस शाखा के पुस्तकालय के लिए आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया।

शाखा के उद्घाटन कार्यक्रम में ५०० से अधिक भक्तों ने भाग लिया।

२५ दिसम्बर २०१४ को सुरेन्द्रनगर शाखा ने सुरेन्द्रनगर जिले के १८० विद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए २४-२४ आध्यात्मिक पुस्तकों के थैले वितरण करने का कार्यक्रम रखा। श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने इन थैलों को विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को सौंपा। साथ ही शाखा ने दो सिलाई मशीनें दो निर्धन जरूरतमन्द महिलाओं को जीवनोपार्जन हेतु दीं।

२६ दिसम्बर २०१४ से १ जनवरी २०१५ तक शाखा

द्वारा एक योगासन शिविर सरदार पटेल विद्यालय में आयोजित किया गया। श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने दीप प्रज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया। श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा सफलतापूर्वक संचालित किये गये इस शिविर में ४५ अध्यापकों सहित १००० विद्यार्थी विभिन्न विद्यालयों से सम्मिलित हुए।

शाखा द्वारा २६ दिसम्बर २०१४ से ३ जनवरी २०१५ तक श्री राम कथा का आयोजन भी किया गया। वृन्दावन के विद्वान् सन्त श्री स्वामी राधामोहनदास जी द्वारा की गयी इस कथा में १५०० के लगभग भक्त सम्मिलित हुए। इन कार्यक्रमों के दौरान नि:शुल्क वितरणार्थ पाँच पुस्तकों (चार गुजराती, एक अँगरेजी में) का भी श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज ने उन्मोचन किया।

उत्तर प्रदेश

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की जन्म शताब्दी के तत्त्वावधान में, डी एल एस कानपुर शाखा ने मुख्यालय आश्रम में ३-४ जनवरी २०१५ को श्री रामचरितमानस का अखण्ड पाठ किया। डी एल एस कानपुर शाखा के दश भक्तों सहित आये हुए श्री ए. पी. श्रीवास्तव जी ने दिव्य नाम मन्दिर में वाद्य यन्त्रों सहित मधुर स्वर एवं ध्वनि से यह पाठ किया। कार्य के प्रारम्भ और समापन कार्यक्रम में उपस्थित होते हुए परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने आशीर्वादित किया।

हम अपनी नासमझी के कारण अपने मानवीय व्यक्तित्व जो कि हमें मोक्ष के साधन के रूप में प्राप्त हुआ था, को अपने बन्धन का कारण बना लेते हैं, क्योंकि हम उसके तुच्छ भौतिक पक्ष से ही अपनी पहचान बनाये रखते हैं, राजकुमार सिद्धार्थ की भाँति अपने भीतर नहीं उतरते। उसने जब देखा और समझा कि सब-कुछ निस्सार है, क्षणभंगुर है, परिवर्तनशील है, प्रतिक्षण अदृश्य होता हुआ केवल प्रतीति मात्र है, उसने एक महान् कदम उठाया। उसे भी अनेक समस्याओं और प्रलोभनों का सामना करना पड़ा था। किन्तु जिस प्रकार समुद्री जहाज के चालक का दिक्सूचक यन्त्र, भले ही समुद्र शान्त हो अथवा तूफान में हो, जहाज वायुवेग से उलट-पलट रहा हो, उसकी सुई सदा उत्तर की ओर ही रहती है, उसी प्रकार उसने हर दशा में अपना मन लक्ष्य पर ही दृढ़ रखा।

इसी प्रकार यदि आप अपने मानवीय व्यक्तित्व के भीतर, अपनी पहचान की जागरूकता की अन्तरतम अवस्था में, सदैव अपनी वास्तविकता में निवास करते रहते हैं, तब आपके लिए कोई भी बन्धन नहीं है, तब आप वर्तमान बद्ध अवस्था में प्रतीत होते हुए भी मुक्त अवस्था में हैं।

स्वामी चिदानन्द

तमिलनाडु

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के 'जन्म शताब्दी महोत्सव' का शुभारम्भ, तमिलनाडु में, १३ जनवरी २०१५ को 'चिन्मया हैरिटेज सैंटर, चेतपट, चेन्नै' में एक कार्यक्रम का आयोजन करके, परम पूज्य गुरुमहाराज के एक विशिष्ट डाक-लिफाफे, 'माई स्टैम्प' तथा पूज्य श्री स्वामी जी महाराज की आवाज सहित एक संगीतमय 'एलबम' (संग्रह पुस्तक) के उन्मोचन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ, 'चिदानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव' डी एल एस राशिपुरम् शाखा के संयोजक श्री के. कंडा स्वामी के स्वागत भाषण से हुआ। इसके बाद श्री टी. मूर्ति (आई पी एस, चीफ पोस्टमास्टर जनरल, तमिलनाडु सर्किल) ने परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज (महासचिव, डी एल एस मुख्यालय), पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द सुन्दरानन्द जी महाराज (चेयरमैन डी एल एस चेन्नै) और पूज्य श्री स्वामी मित्रानन्द जी महाराज (आचार्य, चिन्मया मिशन चेन्नै) की पावन उपस्थिति में इस विशेष डाक-लिफाफे, माई स्टैम्प तथा संगीतमय एलबम का उन्मोचन किया तथा श्री टी. मूर्ति जी ने पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज को प्रथम डाक-लिफाफा एवं संगीतमय एलबम भेंट की।

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने उपस्थित श्रोताओं को अपने प्रेरणाप्रद प्रवचन से आशीर्वादित

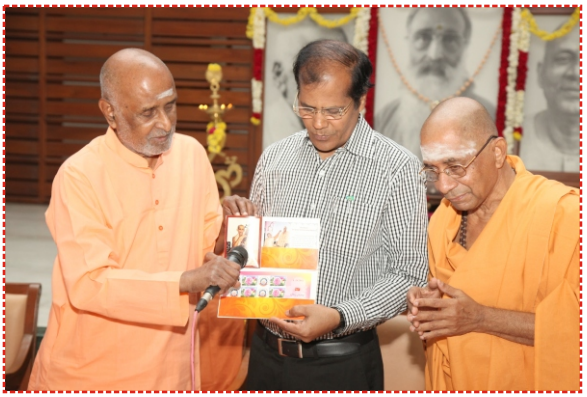

किया। पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द सुन्दरानन्द जी महाराज, पूज्य श्री स्वामी मित्रानन्द जी महाराज तथा श्री टी. मूर्ति जी ने अपने संक्षिप्त प्रवचन गुरुमहाराज की प्रेरणाप्रद जीवनी एवं शिक्षाओं के सम्बन्ध में देते हुए परम पूज्य गुरुमहाराज को श्रद्धांजलि समर्पित की। डा. वेंकट सुब्रमन्यम ने समस्त कार्यक्रम का संचालन किया। मंगल आरती और पावन प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

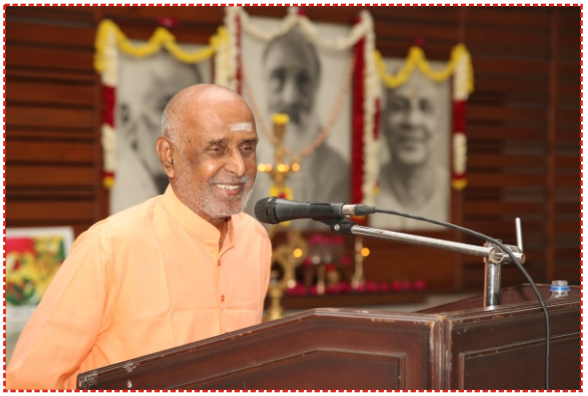

लहरों को एक-दूसरे से भिन्न रूप में देखने से भले ही वह असंख्य प्रतीत होती हों; किन्तु सागर के सन्दर्भ में देखा जाये, तो वह सब एक जल ही है। एक ही जल के ऊपर ही वह उत्पन्न होती हैं, एक जल के ऊपर ही वह रहती हैं और उसी जल में ही विलीन हो जाती हैं। और इस त्रिविध के रूप के समय में भी केवल समुद्र-रूप में ही उसकी सत्ता है। जब वह लहरों में प्रतीत हो रही होती हैं, तब भी वास्तव में केवल मात्र समुद्र का ही अस्तित्व होता है जो नानाविध रूपों में भास रहा होता है। ब्रह्म और मनुष्य भी वस्तुत: यही हैं। परमात्मा और आत्मा की वास्तविकता यही है। हम और हमारे चतुर्दिक् विद्यमान उस सत्ता की वास्तविकता भी यही है। केवल एक ही है। सामंजस्य का अस्तित्व है। केवल गहन शान्ति ही परिव्याप्त है। परमानन्द ही सर्वत्र व्याप्त है। परिवर्तनशील परिस्थितियों के पीछे केवल एकमेव परम आनन्द, परम शान्ति और समरसता ही व्याप्त है। परिवर्तन क्षणिक अभिव्यक्ति है, अपरिवर्तनशीलता वास्तविक है और यह वास्तविकता ही दिव्यता है। यह नित्य-विद्यमान दिव्यता ही परम गहन शान्ति और सतत परम आनन्द है। ***स्वामी चिदानन्द***

आन्ध्र प्रदेश

आन्ध्र प्रदेश में परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में, डी एल एस मुख्यालय की प्रबन्धक समिति के सदस्य तथा 'श्री स्वामी शिवानन्द स्कूल, करवाडी' के निदेशक, श्री साई बाबू तथा डा. गीता साई बाबू ने विद्यालय के 'गुरु कुटीर बाहरी सभा भवन' में १७ जनवरी २०१५ को एक विशेष सत्संग आयोजित किया। उनके अनुरोध पर परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज सत्संग में सम्मिलित होने के लिए करवाडी गाँव में गये। श्री स्वामी जी महाराज का वहाँ नादस्वर एवं तालवाद्यों सहित पारम्परिक विधि से स्वागत किया गया। श्री स्वामी जी महाराज ने अपने प्रेरणाप्रद सन्देश द्वारा भक्तों को आशीर्वादित किया। वहाँ के स्थानीय भक्तों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक सत्संग में भाग लिया।

'स्वामी चिदानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव' के तत्त्वावधान में, काकिनाडा की डी एल एस शाखा तथा पूर्वी गोदावरी जिले की कुछ शाखाओं ने १९ जनवरी २०१५ को शिवानन्द क्षेत्रम, काकिनाडा में एक बड़ा

विशाल सत्संग आयोजित किया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा अन्य आश्रमों के सन्तों ने अपनी पावन उपस्थिति से सत्संग की शोभा में वृद्धि की। परम पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने 'दिव्य जीवन' विषय पर आशीर्वचन दिये। इस सत्संग में ३०० के लगभग भक्त सम्मिलित हुए।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा, सद्गुरुदेव एवं परम पूज्य गुरुमहाराज के आशीर्वाद सब पर हों!

दिव्यता आपका वास्तविक स्वरूप

'दिव्यता' एक 'संकेत-शब्द' है। मनुष्य की भगवान् के विषय में क्या अवधारणा है? वह दया का सागर है। इसलिए ज्ञान और ध्यान को सफल बनाने वाली एक साधना है : दयालु बनना, करुणामय होना, क्षमाशील, उदार होना, दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना, भला बनना और भलाई करना। अपने मानवीय स्तर पर रह कर कार्य न करें, प्रत्युत अपनी दिव्यता के स्तर से कार्यशील हों; क्योंकि आपका मानवीय व्यक्तित्व तो केवल कुछ ही देर के लिए है, अस्थाई है।

आपकी दिव्यता ही आपका वास्तविक स्वरूप है। इसी को जाग्रत होने दें। वह सब-कुछ, जो ईश्वरीय है, जो सुन्दर है, उदात्त है और दिव्य है, उसका स्वयं को केन्द्रीय तत्त्व बनायें। अन्य सबके सुख-दु:ख में अपना सुख-दु:ख अनुभव करें। सहानुभूतिशील बनें। किसी पर दु:ख आने पर तत्काल करुणा के देवता बन कर कार्यरत हो जायें। करुणा, शान्ति और आनन्द प्रसारित करने वाले उपकरण बन जायें। अपने जीवन में, अपने जीवन के द्वारा ईश्वरीय प्रेम, दया, करुणा और सहानुभूति प्रसारित करने का माध्यम बन कर रहें।

स्वामी चिदानन्द